Original Research Paper History

स्वतन्त्रता आंदोलन का प्रथम चरण–उदारवादी आंदोलन

डा0 बलकार सिंह सहायक प्रोफेसरए इतिहास विभाग, ए आई0जी0यू0, मीरपुर, रेवाड़ी

मनोज कुमार रिसर्च स्कोलरए इतिहास विभाग,ए आई0जी0यू0, मीरपुर, रेवाड़ी

KEYWORDS :

उदारवादी आन्दोलनकारियों की प्रमुख मांगे :–
उदारवादी आन्दोलन के नेताओं ने शिष्टमण्डल, वार्षिक सम्मेलनों, मांग पत्रो एवं पत्र व्यवहार द्वारा अधिकांश क्षेत्रों में सुधार की मांग की। उदारवादी नेताओ की प्रमुख मांगे इस प्रकार थी :–
धारा सभाओ में जनता के द्वारा चुने गये सदस्यों की संख्या बढाई जाये तथा उनके अधिकारों में वृद्वि हो ।

प्रेस पर लगाऐ गये कठोर प्रतिबंध को हटाया जाये तथा लाईसेंस प्राप्ति को आसान बनाया जाये ।

भारतीय उदयोगो का बढावा देने के लिए विदेशी माल पर ज्यादा कर लगाया जाए ।

न्याय व्यवस्था में सुधार किया जाये तथा न्याय व्यवस्था पर ज्यूरी का नियंत्रण स्थापित किया जाये ।

भारत पर अंग्रेजी शासन के गुण दोषों के बारे में पता लगाने के लिए एक रॉयल कमीशन का गठन किया जाये तथा इण्डियन कौसिंल को समाप्त किया जाये।

भारतीय सिविल सेवा में प्रवेश की आयु बढाई जाये तथा इसका आयोजन भारत में भी किया जाये ।

कृषि के विकास पर ध्यान दिया जाये तथा कृषि पर बढते भार को कम किया जाये और कूटीर एंव हस्तकरघा उद्योगों को बढावा दिया जाये।

उदारवादी की लोकप्रियता :–
कांग्रेस का उदारवादी नेतृत्व पढा लिखा तथा सम्पन्न परिवारो से था तथा यह बुदिजीवियों की संस्था थी । जब सरकार कोई विशेष अन्यायपूर्ण कार्य करती तब ये सभाओ का आयोजन करते और प्रार्थना–पत्र भेजते, अन्यथा वे दीर्घकाल तक संतुष्ट होकर निष्क्रिय बैठे रहते थें। लेकिन ज्यों–ज्यों उदारवादियों ने आम जनता से जुडे सुधारों पर बात की तथा जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट किया जनता में इसकी लोकप्रियता बढती चली गई तथा उदारवादी आन्दोलन के अंत तक कांग्रेस भारत के बहुत बडे तबके का प्रतिनिधित्व बन कर उभरी । कागेंस की प्रगति के संबंध में पट्ट भि सीतारमैया का कहना है कि '' जिस प्रकार एक बडी नदी का मूल एक छोटे नाले से होता है उसी प्रकार महान सरचनाओं का प्रारम्भ भी बहुत साधारण होता है । जीवन के प्रारम्भ में वे अत्यन्त वेग के साथ दौडती है परन्तु ज्यों–ज्यों व्यापक होती है त्यों–त्यों उनकी गति मंद किन्तु स्थिर होती जाती है तथा वे उसको अत्याधि ाक सम्पन्न बनाती जाती है । यही उदाहरण हमारी कांग्रेस पर भी लागू होता है।''
उदारवादी आन्दोलन के प्रति सरकार का दृष्टिकोण :–

जब 1885 ई में कांग्रेस की स्थापना हुई तो उस समय इसे भारत के तत्कालीन वायरसराय लार्ड डफरीन का आशीवार्द प्राप्त था। अंग्रेजी हुकूमत इसे जन आन्दोलन से बचने का सुरक्षा वाल्व समझती थी। सरकार को विश्वास था कि कांग्रेस का नेतृत्व ऐसे सम्पन्न एंव आराम–पंसद भारतीयों के हाथो में रहेगा तो हिसंक मार्ग अपनायेगें और न ही सरकार की कटु आलोचना करेगें। इस प्रकार कांग्रेस सरकार द्व ारा निर्देशित मार्ग पर चलेगी। लेकिन 1988 ई के अतं तक उदारवादी तथा अंग्रेजी हुकुमत के संबंधो में खटास आनी शुरु हो गई। सरकार ने कांग्रेस की बढती लोकप्रियता को रोकने के लिए अपनी ओर से अनेकों प्रयास आरम्भ कर दिये। लार्ड डफरीन ने कांग्रेस की निन्दा करते हुए कहा कि ''मुझे उसका भारतीय जनता के प्रतिनिधित्व का दावा बेबुनियाद लगता है कांग्रेस तो एक ऐसे नगण्य अल्पमत का प्रतिनिधित्व करती है जिसको एक शानदार और विभिन्न रूपों वाले सामाज्य के शासन की बागडोर हर्गिज नही दी जा सकती।'' देशी राजाओ, जमीदारो ओर मुसलमानों को कांग्रेस से दूर रखने के प्रयास आरम्भ कर दिये गये । सन 1888 ई के कांग्रेस अधिवेशन में शेख राजा हुसैन खा ने इस संबंध में कहा था कि '' ये मुसलमान नही वरन उनके सरकारी आका है जो कांग्रेस का विरोध करते है।'' सरकारी कर्मचारी एंव अधिकारियों के लिए कांग्रेस अधिवेशनो से दूर रहने के फरमान जारी कर दिया गया । 1890 ई में बंगाल सरकार के एक आदेश में कहा गया था कि '' भारत सरकार के आदेशो के अधीन कांग्रेस की बैठको, दर्शको के रूप में भी सरकार अधिकारियों की उपस्थिती वाछंनीय नही है और इस प्रकार की बैठको में उनके भाग लेने को निषेध किया जाता है।'' इन सब के वावजुद उदारवादी नेतृत्व बिटिश हुकुमत का नाराज नही करना चाहते था। इसलिए वे सरकार के इस दमन को चुपचाप सहन करते हुए अपने कार्य में लगे रहे ।

उदारवादी नेतृत्व की कार्य योजना :–
उदारवादी नेताओ की रणनीति सरल, स्पष्ट और विनम्र सघर्ष की थी। उन्होने सरकार के विरूद्व कभी भी कठोर एवं कडवी भाषा का प्रयोग नही किया तथा अपने अधिवेशनों में लगातार नागरिक अधिकारों की मांगो के संदर्भ में प्रस्ताव पारित किये । उदारवादियों की रणनीति का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है :–

सस्कार से विनम्र अनुरोध :–
उदारवादी नेतृत्व संवैधानिक तरीको में विश्वास रखते थे। वे अधिवेशनो में पारित मांगो को अपने द्वारा सम्पादित विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम सरकार व जनता के समक्ष रखते तथा उन्हे लागु करवाने के लिए अत्यंत विनम्र भाषा में सरकार के अपने प्रतिवेदन भेजते ।

बिटिश जाति की न्यायप्रियता में विश्वास :–
उदारवादी नेताओ का मानना था कि अग्रेंज लोग स्वतंत्रता तथा न्याय प्रेमी है तथा दूसरो की स्वतंत्रता तथा हको का सम्मान करते है वे अग्रेंजों की ज्यूरी प्रथा से बहुत प्रभावित थे तथा उनको विश्वास था कि उसी न्याय प्रणाली को अग्रेंजी हुकुमत भारत में भी लागू करेगी । अग्रेंजी सभ्यता के प्रति झुकाव की एक बानगी इस प्रकार है। काग्रेंस के बाहरवें अधिवेशन में रहीम तुल्ला सम्मानी ने कहा था कि '' अग्रेजो से बढकर सचचरित्र तथा सच्ची जाति इस सूर्य के प्रकाश के नीचे नही बसती । ''

क्रमिक सुधारो में विश्वास :–
उदारवादियो का मानन था कि अग्रेजों को जिस दिन यह विश्वास हो जाएगा कि भारतीय स्वशासन के योग्य हो गये वे उन्हें भारत का शासन सौंप देगें। इसके लिए वे क्रमिक सुधारों में विश्वास करते थे । उनका मानना था कि इसके लिए पहले शासन में भाग लेना चाहिए । अयोध्या सिंह के शब्दों में '' उदारवादी नेता देश की स्वतंत्रता और बिटिश राज्य के अंत की मांग नही करते थे । स्वतंत्र और स्वाधीन भारत उनका लक्ष्य भी न था । कांग्रेस नेताओ ने बार–बार स्पष्ट कहा कि वे क्रान्ति नही चाहते, स्वतंत्रता नही चाहते, नया सविधान भी नही चाहते सिर्फ केन्द्र और प्रान्तो की कौसिलों में भारतीयो का प्रतिनिधितव चाहते है।''

उदारवादी आन्दोलन की असफलताएं :–
उदारवादी नेता ब्रिटिश न्यायप्रणाली में विश्वास रखते थे तथा महारानी के शासन को भारत के लिए हितकर मानते थे। वे इस बात को समझ नही पाये कि अंग्रेजो ने भारत में यातायात, संचार, शिक्षा कानून व्यवस्था आदि का विकास भारत की बेहतरी के नही बल्कि अपने साम्राज्य की सुरक्षा के लिए किया था । सरकार ने उनकी मागों को कभी भी गम्भीरता से नही लिया और न ही उन पर कभी ठोस कदम उठाया उदारवादी नेता सम्पन्न परिवारों से सम्बन्ध रखते हुए न तो कोई प्रत्यक्ष कार्यवाही कर सकते थे और न ही किसी प्रकार का बलिदान कर सकते थे। गुरूमुख निहाल सिंह ने लिखा है कि ''सम्भवतः गोखले को छोडकर कांग्रेस के नरम नेताओ में स्वतंत्रता के लिए व्यक्तिगत बलिदान करने ओर आपतियां सहन करने को कोई तैयार नही था।'' इस तरह हम कह सकते है कि उदारवादी अपने लक्ष्य में लगभग असफल ही रहे।

उदारवादी आन्दोलन की उपलब्धियां :–
भारत राष्ट्रीय आन्दोलन का यह प्रथम चरण असफलताओ के बावजूद अपने आप में बहूत महत्वपूर्ण है ं यदि उदारवादी शुरू से ही पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करते तो उनके लिए यह बहूत घातक सिद्व होता क्योकि एक तो उनका संगठन राष्ट्रीय स्तर पर खडा नही हुआ था तथा जनसाधारण में भी इस बारे अधिक जागृति नही थी । उदारवादियों की प्रमुख उपलब्धिया इस प्रकार है ।

राजनीतिक नेतृत्व का विकास :–
यद्वपि उदारवादी जनमानस को प्रभावित करने मे असफल रहे लेकिन जनता में राजनितिक नेतृत्व के बीज उन्होने अवश्य बो दिये उन्होने जनमानस को प्रजातन्त्रामक शासन, व्यक्तिगत स्वतंत्रता व स्वशासन आदि शब्दो से परिचित करवाया । ं डा0 ईश्वरी प्रसाद के अनुसार '' उदारवादियो की कार्यपद्वति का उपहास उडाये जाने के बावजूद इस बात से इंकार नही किया जा सकता है कि उनहोने राष्ट्रीय जीवन के उत्थान के लिए आवश्यक मानवीय शक्ति और साधनों की व्यवस्था की है ।

संवैधानिक विकास में योगदान :–
कांग्रेंसी नेताओ के लगातार स्मरण पत्रों मांगपत्रों व अधिवेशनो में पास प्रस्तावों के फलस्वरूप ही 1892 ई का परिषद अधिनियम पारित हो पाया । उदारवादियों की एक ओर सफलता 1897 ई में गठित बेल्वी कमीशन था । जिसका कार्य भारत सरकार के खर्चो की जांच करना था ।

अंग्रेजी हुकुमत के दोषों को उजागर करना :–
उदारवादियों ने अंग्रेजी हुकुमत द्वारा भारत के शोषण को दुनिया के समक्ष रखा तथा ब्रिटिश सरकार की कार्यप्रणाली की खुलकर आलोचना की।

स्वतंत्रता सग्रांम की आधारशिला :–
उदारवादी आन्दोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नीव रखी थी । उन्होने जनमानस में स्वशासन तथा स्वतंत्रता के प्रति भरोसा पैदा किया। के.एम. मुशीं ने लिखा है कि '' यदि पिछले 30 वर्षो में कांग्रेंस के रूप में एक अखिल भारतीय संस्था देश के राजनैतिक क्षेत्र में कार्यरत न होती, तो ऐसी अवस्था में गांधी जी का कोई भी महान आन्दोलन सफल न हो पाता ।''

राष्ट्रीयता का प्रसार :–
उदारवादी आन्दोलन ने देश में राष्ट्रीयता का प्रसार किया । कांग्रेस के अधिवेशनों में राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रसार होता था । डा0 मोहनलाला गुप्ता का कहना है कि ''उदारवादी नेताओ ने कांगेस को नौकरशाही के क्रूर हाथों से बचाकर भविष्य के लिए उसकी जडे इतनी गहरी कर दी कि बाद में नौकरशाही तो क्या स्वंय इग्लैंड की सरकार भी कांग्रेंस को नष्ट नही कर सकी।''

मूल्यांकन :–
अधिकतर इतिहासकारों का मानना है कि उदारवादियों को अपने आन्दोलन में बहुत अधिक सफलता नही मिली। परन्तु उदारवादी आन्दोलन को असफल घोषित करना भी आलोचकों के लिए सही नही है। उन्होने तत्कालीन परिस्थितियों में जो कुछ बन सकता था उसके लिए अथक प्रयास किये।

संदर्भ सूची

एन.सी.आर.टी	:	आधुनिक भारत
विपिनचन्द्र	:	आधुनिक भारत का इतिहास
आर.जी.प्रधान	:	इण्डियन स्ट्रगल फॉर स्वराज
सुमितसरकार	:	बंगाल में स्वदेशी आन्दोलन
पट्टाभि सीतारमैया	:	कांग्रेंस का इतिहास
मोहन लाल गुप्ता	:	आधुनिक भारत का इतिहास
ए.सी मजूनदार	:	इण्डियन नेशनल वोल्यूनशन
डी.सी.गुप्ता	:	इण्डियन नेशनल मूवमैन्ट
रामगोपाल	:	भारतीय राजनीति
ऐनी बेसेंट	:	हाउ इण्डिया राटॅ फार फ्रीडम
अयोध्या सिंह	:	भारत का मुक्ति संग्राम
जी.एन. सिंह	:	भारत का वैधानिक एंव राष्ट्रीय विकास
ईश्वरी प्रसाद	:	हिस्ट्री आफ माडर्न इण्डिया
के.एम. मुंशी	:	ऐडवेन्ट आफ इडिपेन्डेन्स
मोहनलाल गुप्ता	:	आधुनिक भारत का इतिहास